॥ द्वितीय अध्याय ॥

** अध्याय दो **

कवि निराला की काव्यसाधना।

२.१ निराला के काव्य साधना का विकास

२.२ निराला के काव्य में वैविध्यता

२.३ प्रारंभिक रचना काल

२.४ विकास तथा प्रसिध्दि काल

२.५ प्रौढतम् रचना काल

२.६ निराला काव्य का उत्तर रचनाकाल

२.७ निराला की काव्य रचनाओं का संक्षेप में परिचय

२.७.१ अनामिका [प्रथम]

२.७.२ परिमल

२.७.३ गीतिका

२.७.४ अनामिका [द्वितिय]

२.७.५ तुलसीदास

२.७.६ कुक्कुरमुत्ता

२.७.७ अणिमा

२.७.८ बेला

२.७.९ नये पत्ते

२.७.१० अर्चना

२.७.११ आराधना

२.७.१२ गीतगूँज

२.७.१३ सांध्य - काकली

२.८ निष्कर्ष

२.१ निराला के काव्य साधना का विकास :

" निराला " ने जिस युग में काव्य रचना की वह युग छायावादी युग था। स्वयं कवि निराला छायावाद के चार आधारस्तंभ कवियों में से एक थे। [प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी] परंतु " निराला " एक ऐसे तेजस्वी कवि थे जो किसी एक ही काव्य - धारा के संकुचित घेरे मे बंद होनेवाले नही थे। छायावादी कविता में कल्पना की अधिकता आती गयी। उस कविता का धरती से संबंध टूट गया। " निराला " को यह बात रुचि नहीं और उन्होने कविता का समाज से धरती से टूटा हुआ नाता फिर से जोड़ लिया। उन्होने छायावादी काव्य का संकुचित दायरा तोड दिया और वे प्रगतिशील और प्रयोगशील काव्य की निर्मिती करने लगे। इसीलिये ऐसे प्रतिभासंपन्न, वैविध्यप्रेमी, प्रगतिवादी कवि को किसी एक ही विशिष्ट युग[छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी] के साथ जोडा नहीं जा सकता। या कवि के काव्य - काल के लिये कोई एक विशिष्ट नाम नहीं दिया जा सकता।

" निराला " की काव्य - रचनायें इतनी प्रभावी हैं कि, उनका प्रभाव एक पूर्ण शताब्दि पर स्पष्ट रूप से अधिकार जमायेगा। उनका काव्य नये कवियों को प्रेरणा और प्रोत्साहन देता रहेगा। निराला के काव्य-ग्रंथ हिन्दी साहित्य के इतिहास की अमर कृतियाँ हैं। इस दृष्टि से निराला का काव्य शताब्दि का काव्य है और कवि " निराला " शताब्दि के कवि है।

२.२ निराला के काव्य में वैविध्यता :

" निराला " के काव्य में भाव, भाषा, शैली, विषय आदि सभी बातों में विविधता दिखायी देती है। आधुनिक हिन्दी कवियों में निराला ही एक ऐसे कवि है जिनके काव्य में विविधता भरी हुई है। उनके काव्य में

मनोरम संयत शृंगार की रचनायें है उसी प्रकार विद्रोह की भूमिका पर निर्कमित श्रृंगार की रचनायें भी है।

" निराला " की " राम की शक्तिपूजा " कविता में वीरत्व के उदात्त पक्ष मिलता है। इस प्रदीर्घ कविता में महाकाव्योचित गुण उपलब्ध होते है। उनकी " बादल - राग " कविताओं में विस्फोटक भावनाओं की प्रधानता है। " शिवाजी का पत्र " कविता में करुणा मिश्रित वीर रस के दर्शन होते है। " जागो फिर एक बार " कविता में नव उद्बोधन का स्वर प्रबल है।

" निराला " के राष्ट्रीय गीतों में स्वदेश का सौंदर्यांकन किया गया है। इनमें सांस्कृतिक तत्वों का संयोग है। साथ - साथ राष्ट्रीय विघटन और दरिद्रता के प्रति करुण - संवेदना भी है।

" निराला के ऋतुगीत अप्रतिम है। ऋतुगीत पर आधारित कविताओं में जहाँ प्रकृति के विकास और उल्लास का चित्रण किया गया है वहाँ प्रकृति के रौद्र और विस्मयकारी रूप को भी चित्रित किया गया है।

उनकी " सरोज - स्मृति " नामक कविता में कवि की वैयक्तिक आंतरिक करुणा की धारा प्रवाहित हुई है। उनके " तुलसीदास " इस खण्ड काव्य में तटस्थता पर आधारित राष्ट्रीय परवशता के करुण- चित्र चित्रित किये गये है। महाप्राण निराला की दार्शनिक कविताओं में जहाँ शांत रस की भावयोजना की गयी है, वहाँ विशुध्द वैयक्तिक आत्मनिवेदन भी है। शांत - रस के साथ साथ " निराला " ने अन्य कविताओं में हास्य - व्यंग्य

की धारायें भी बहायी है। इस प्रकार " निराला " की काव्य रचनाओं में अनेकरूपता है, असीम विशालता है।

२.३ प्रारंभिक रचना काल :

हिंदी - काव्य - क्षेत्र में प्रवेश करते समय " निराला " ने देखा कि काव्य क्षेत्र में युगानुकूल पुनरुत्थान की आवश्यकता है। जयशंकर प्रसाद के काव्य की स्वच्छन्द मधुर कल्पना से निराला बहुत प्रभावित थे। बंगला भाषा के काव्य की दुनिया भर में जो कीर्ति फैली थी वह उन्होंने देखी थी। राम-कृष्ण और विवेकानन्द की भावुकता और दार्शनिक प्रौढता से उन्हों ने प्रेरणा ग्रहण की थी। परमप्रिय पत्नी मनोहरादेवी की प्रेरणा से तुलसी-दास की असामान्य काव्य - प्रतिभा से वे प्रभावित हुये थे। इन सब बातों के परिणामस्वरूप निराला में युगांतर का प्रतिनिधित्व करने की और युग परिवर्तन करने की असाधारण शक्ति आ गयी थी।

सन १९१६ से "निराला " ने काव्य लिखना प्रारंभ किया। सन १९१६ से १९२४ तक का समय उनकी काव्य रचना का प्रयोगकाल कहा जा सकता है। इस समय " निराला " ने जो काव्य रचा है, उसमें विविधता देखने को मिलती है। " जुही की कली " में कवि की आवेशपूर्ण शृंगारी भावना प्रकट हुयी है। " बादल राग " कविता में उद्दाम भावावेग से युक्त क्रांति का आवाहन है। " पंचवटी प्रसंग " कविता में अतीत की संस्कृतियों का उद्वेगमय आकलन है। " शिवाजी का पत्र " में राष्ट्रीय विघटन के करुण उद्गार है।

यह कालखंड " निराला " के कवि जीवन का भले ही प्रारंभिक काल है, तब भी प्रारंभिक सभी कविताओं में उनकी प्रचंड प्रखरता के दर्शन होते है।

परंतु यह भी सच है कि वह धारा किसी एक सुनिश्चित दिशा की ओर नहीं, बल्कि अनेकानेक भावदिशाओं की ओर बढती बहती हुई दिखाई देती है।

निराला एक स्वतंत्रचेता कवि है, क्रांतिकारी कवि है। उन्हे किसी प्रकार के बंधन में रहना मंजूर न था। शायद इसी लिये उन्हों ने अपनी कविता को भी छंदो के बंधन से मुक्त किया। इस प्रकार कवि निराला मुक्त छंद के प्रवर्तक कवि है। निराला न केवल मुक्त छंदो का कवि था, बल्कि मुक्त भाव भूमियों का और मुक्त मानव मुल्यों का मसीहा कवि था।

निराला की प्रथम चरण की अधिकांश कविताएँ मुक्तछंद में है। कविता के क्षेत्र में क्रांतिकारी कवि निराला का यह क्रांतिकारी प्रवेश था। इस समय की उनकी कविता की यह विशेषताएँ है कि, उसमें अनियंत्रितता है, भाव संमय का अभाव है। उसमें कल्पना अतिशायता है। उसमें तारतम्य की कमी है।

२.४ विकास तथा प्रसिध्दि काल :

सन १९२४ से सन १९३६ तक " निराला " की लिखी हुई कवितायें द्वितीय चरण के अंतर्गत आती है। उनके काव्य संग्रह " परिमल " और " गीतिका " की अधिकांश कवितायें इसी समय की है। इसे हम निराला के काव्य के कला सौष्ठव का काल अथवा भावात्मक मर्यादा का काल भी कह सकते है। इस समय स्पष्ट दिखता है कि निराला के उद्दाम भावावेग पर नियंत्रण आ गया है। उनकी कलात्मक दृष्टि में भी सजगता आयी है। इस समय से वे संतुलित काव्य रचना करने लगे। कलात्मक संपन्नता भी इस काल की कविता में पूर्ण रूपसे विकसित दिखाई देती है।

२.५ प्रौढतम रचना काल :

सन १९३५ से १९४० तक की लिखी हुयी निराला की कविताओं को तीसरे चरण में रखा जाता है। निराला की व्यंग्यपूर्ण और विडंबनात्मक कविताओं ने कितनों की खाल उधेडकर रख दी तथा बृहत्तर काव्य सृष्टि आख्यानमुलक रही। भाषा, भाव आदि सब दृष्टिसे इन रचनाओं में महा-काव्य की उदात्तता दिखाई देती है। यह बात " निराला के लिये जितनी गौरवपूर्ण है, उतनी ही यह बात चिंतनीय है कि यही से निराला को नैसर्गिक काव्य - क्षमता विघटित होने लगी। अब तक उनके काव्य में जो सहजता थी उसके स्थान पर आलंकारिकता अधिक आती गयी। निराला के काव्य के दुसरे चरण में जो विशुध्द काव्योत्कर्ष दिखाई देता है वैसा इस तिसरे चरण में नही दिखाई देता। निराला के मानसिक स्वास्थ्य में यही से थोडा थोडा बिगाड हुआ है। वह पहलीवाली सहज, निर्मल, स्वस्थ काव्य धारा लुप्त हो गयी और उसके स्थानपर वैयक्तिक अवसाद की भावना ने जोर पकडा। सन १९३८ में लिखी हुयी " मरण दृश्य " कविता में निराला की बदलती हुइ मनोदशा का स्पष्ट चित्र दिखाई देता है। इसी समय व्यंग्य - विडंबना से भरपुर संस्मरणात्मक रेखाचित्र " बिल्लेसुर बकरिहा " और " कुल्लीभाट " निराला लिख रहे थे।

२.६ निराला काव्य का उत्तर रचना काल :

निराला की सन १९४० से लिखी गयी काव्य समावेश कृतियों का इसमें होता है। " अणिमा " काव्य संग्रह में कुछ पुरानी और कुछ नयी व्यंग्य पुर्ण कवितायें संग्रहित है। " कुकुरमुत्ता " की कविताओं में हास्य - व्यंग्य की मात्रा भरपूर है। " बेला " और " नये पत्ते " इन दोनों काव्यसंग्रहोंकी कवितायें प्रयोगात्मक है। " बेला " में संस्कृत, उर्दू और हिंदी की खिचडी

है। न भावों में गंभीरता है, न विचारों में। " नये पत्ते " अधिक सफल रचना है। इन कविताओं में निराला सौंदर्यवादी दृष्टि छोडकर कुछ यथार्थ की ओर अधिक नजदीक पहूँचे हुए है।

अर्चना, आराधना और गीतगुँज इन संग्रहों की सभी रचनाएँ गीतात्मक है। " अर्चना " के गीतों मे काव्य, संगीत की और भक्ति की त्रिवेणी है। भक्ति, प्रार्थना और विनय के गीतों में निराला को आत्मसमर्पण की भावनाएँ व्यक्त हुई है। सांसारिक जीवन से खिन्न और क्षुब्ध होकर ही निराला ने वे गीत लिखे है। ध्यान में रहे कि, हारकर नहीं लिखे। निराला हारनेवाले व्यक्ति नहीं थे। झुकनेवाले नहीं थे। आत्मपरक गीतों में उनकी आत्मवेदना प्रकट हुई है। इन गीतों में करुण रस की प्रधानता है।

इन काव्य संग्रहोमें कुछ ऋतू और प्रकृति गीत है., पर उनमें पहले जैसा उल्लास और हादीकता नहीं है। जो गीत शृंगारी है, उनमें पहले जैसी ताजगी नहीं। दार्शनिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गीतों में भक्तिभावना की प्रधानता है। उनमें विनय और उपासना का भाव अधिक है। परंतु पहले जैसी पौरुष तत्व की उनमें प्रधानता नहीं। सामाजिक जीवन की विषमता पर लिखे गये प्रगतिवादी गीतों में मानवीय सहानुभूति की प्रधानता और एक तरह की वितृष्णा है। उनमें क्रांति का प्रखर स्वर नहीं।

२.७ निराला की काव्य रचनाओं का संक्षेप में परिचय :

निराला का साहित्य बहुमुखी और विपुल है। उन्होने कविता, उपन्यास कहानियाँ, निबन्ध, रेखाचित्र, जीवनियाँ, आलोचनात्मक निबन्ध, अनुवाद तथा नाटक सभी कुछ लिखे है। निराला का साहित्य युगानुरूप है। निराला

का जीवन एक लम्बे संघर्ष की कहानी है। उनका समस्त साहित्य एक लम्बे जीवन व्यापी संघर्ष की कहानी है। वह सदैव नवीन की खोज करते रहे हैं और प्राचीन के प्रति विद्रोह करते हुए दिखाई देते हैं। इसी कारण निराला के काव्य में विभिन्नता नजर आती है। इनके काव्य का सूक्ष्म अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि, उनका ज्यादातर काव्य स्वान्तसुखाय है। निराला के काव्य का रचना काल १९१६ से १९६१ तक फैला हूआ है। इनके काव्य में कुछ कवितायें रविंद्रनाथ ठाकूर तथा स्वामी विवेकानंदजी की अनुदित है, जिनकी संख्या १० से अधिक नही है। उनके प्रकाशित काव्य ग्रंथो में कुल मिलाकर ६८६ कविताएँ संगृहित है।

कालक्रम के आधार पर " निराला " के काव्य संग्रह

१.	अनामिका	सन १९२३ [प्रथम]
२.	परिमल	सन १९३०
३.	गीतिका	सन १९३६
४.	अनामिका	सन १९३८
५.	तुलसीदास	सन १९३८
६.	कुक्कुरमुत्ता	सन १९४२
७.	अणिमा	सन १९४३
८.	बेला	सन १९४३
९.	नये पत्ते	सन १९४६
१०.	अर्चना	सन १९५०
११.	आराधना	सन १९५३
१२.	गीतगूंज	सन १९५४
१३.	सांध्यकाकली	[मरणोपरान्त प्रकाशित]सन १९६९

" अपरा " जैसा काव्य श्री "एक संकलन प्रकाशित हुआ है, इनके अलावा मतवाला में प्रथम के दिनो में कुछ कविताएँ प्रकाशित हुई हैं वे किसी भी संग्रह में जोडी नहीं है। अन्तत: हम इस निष्कर्ष तक पहूँचते हैं कि, उनके काव्य संकलनों को छोडकर उनके काव्य साधना में १३ काव्य ग्रंथ निश्चित होते है। इनके काव्यसाधना को प्रमुख काव्य प्रवृतियों की दृष्टिसे रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद के अंतर्गत विभाजित किया जा सकता है। मगर उनके कुल काव्य संग्रहों को पढकर विभाजित करना कठिन तथा समयी कार्य है। इसिलिए अब हम उनके काव्य ग्रंथो के संक्षिप्त परिचय से साहित्य साधना से परिचित हो सकते हैं।

२.७.१ अनामिका – [प्रथम : सन १९२३]

इसमें इनकी प्रारंभिक रचनाएँ संग्रहित है। इसकी कविताएँ रहस्यात्मक तथा छायावादी थी। इस संग्रह में कुल ९ कविताएँ थी।

१] अध्यात्मकुल, २] माया, ३] जलद, ४] अभियास, ५] तुम और मैं, ६] जुही की कली, ७] पंचवटी प्रसंग, ८] सच्चा प्यार, ९] लज्जित

२.७.२ परिमल – सन १९३०

इसमें सन १९१६ से सन १९३० तक लिखी हुई ७८ कविताएँ संम्मिलित है। जिसमें प्रथम अनामिका की ४ ७ रचनाएँ पूर्ण; प्रकाशित हुई है। इन कविताओं के प्रमुख विषय इस तरह रहे -- प्रार्थना, प्रकृति, प्रेम, नारी सौंदर्य, देशप्रेम, आध्यात्मिक तथा सामाजिक आदि। यह काव्य संग्रह इनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काव्य संग्रह हैं। " भिक्षुक", "विधवा," दीन आदि कविताओं में सामाजिक आदर्शों का –हास दिखाया है। प्रकृति चित्रण में "सन्ध्या सुंदरी",

" जुही की कली ", "बादल राग", आदि कविताएँ प्रमुख हैं। इसके अलावा "निवेदन", "आदान-प्रदान", पंचवटी प्रसंग", " स्मृति चुम्बन ", " विफल - वासना ", " मौन ", " जागो फिर एक बार ", " छ. शिवाजी का पत्र ", " यमुना के प्रति ", " तुम और मैं ", आदि महत्वपूर्ण कविताएँ इसमें सम्मिलित हुई है। " परिमल " की रचनाओं में वस्तुव्यंजना की ओर कवि का ध्यान है इसमें अंतर्गत इनके रचना " जुही की कली " में उनकी कल्पना उनके भावेगो कें साथ होड बनती है इसी कारण यह रचना बहुत लोकप्रिय हुई है। " [१]

२.७.३ गीतिका - सन १९३६

गीतिका में अनेक नवीन प्रयोग हुए हैं। इसमें रहस्यवादी गीतों की प्रमुखता है। गीतिका में मुख्यता प्रेम प्रकृति और परमात्मा के गीत है। इसके सभी गीतों में भाव प्रवाह होने के कारण संगीतात्मकता आ गई हैं। कवि निराला बंगला संगीत से पुर्णत: परिचित थे, तथा रविंद्रनाथजी के संगीत के समान हिन्दी गीतों में संगीतात्मकता लाना चाहते थे। जिसकी कोशिश इस संग्रह में देखने को मिलती है। इस संग्रह के बारे में डॉ. हजारी प्रसाद लिखते है-गीतिका के गीत ठूँठ हो गए है और दुर्बोध तो है ही। " [२]

२.७.४ अनामिका : द्वितीय सन १९३८

यह संग्रह निराला की प्रौढता का परिचायक है। इसमें राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति, वनबेला, दान, प्रेयसी, तोडती पत्थर आदि बहुमुखी विषयों पर आधारित महत्वपूर्ण कविताएँ संम्मिलित है। डॉ. वर्मा का मत -- " जिस तरह प्रसाद की स्थायी कीर्ति का स्तम्भ कामायनी है, उसी तरह निराला की स्थायी कीर्ति अनामिका से मानी जाएगी।" [३]

२.७.५ तुलसीदास : सन १९३८

निराला का एकमात्र खंडकाव्य है। महाकवि तुलसीदास के जीवन से संबंधित घटनाओं पर लिखी गई छायावादी काव्यकृति है। जिसमें तुलसीदास के अंतर्मन का मनोवैज्ञानिक चित्रण तथा तत्कालिन संस्कृति का चित्रण देखने को मिलता है।

२.७.६ कुक्कुरमुत्ता : सन १९४२

यह काव्य संग्रह प्रगतिवादी कविताओं से युक्त है। जिस में सामाजिक व्यंग प्रधान है।

२.७.७ अणिमा : सन १९४३

इसमें सन १९३७ - ३८ से १९४३ तक की कविताएँ संग्रहित है। संत कवि रैदास के प्रति महादेवी वर्मा के प्रति ऐसी प्रशास्तिपरस्व ८ कविताएँ इसमें संग्रहित हैं। इसके अलावा " नुपुर के स्वर मंद रहे ", सहस्त्राब्दि उद्बोधन आदि कविताएँ महत्वपूर्ण है।

२.७.८ बेला : सन १९४३

इस संग्रह में भी कई नवीन प्रयोग हुए हैं। उर्दू गजल शैली में इसकी कविताएँ लिखने का प्रयास निराला ने किया है। इस संग्रह में सामाजिकता राष्ट्रीयता प्रेम और शृंगार तथा रहस्यानुभूति भावनाओं से युक्त गीत लिखे हैं। डॉ. मेहरा के अनुसार — " उर्दू शैली की निराला की कविताएँ वहाँ अधिक सफल है, जहाँ उन्होने हास्य और व्यंग्य का पल्ला पकडा है। " ४

२.७.९ नये पत्ते : सन१९४६

इसमें कुल २८ कविताएँ हैं। जिसका मुख्य स्वर व्यंग है। इस संग्रह की व्यंगतात्मक कविताएँ महत्वपूर्ण हैं। कुत्ता भौंकने लगा ", महँगू महँगा रहा ", गर्म पकौडी," " रानी और कानी ", आदि कविताएँ महत्वपूर्ण है। "प्रयोगवादी प्रवृत्ति का प्रथम दर्शन इस कृति में प्राप्त होता है। " [५]

२.७.१० अर्चना : सन १९५०

इस संग्रह में विनय तथा भक्ति का स्वर मुख्य हैं। यह संग्रह एक गीत संग्रह है। तथा इसके गीतों में कविने संगीतात्मकता तथा गेयता की ओर विशेष ध्यान दिया है।

२.७.११ आराधना : सन १९५३

सन १९५१ और ५२ में लिखे गए गीत इसमें संग्रहीत है। गीतो में ग्रेयता तथा सत्यम् शिवम् सुंदरम् तत्व की प्रधानता है। आस्था का स्वर अधिक मुखरित है।

२.७.१२ : गीतगुंज : सन १९५४

इसमें २५ गीत हैं। विनय एवं भक्ति आत्मपरस्व गीतो के अलावा प्रकृतिवर्णन गीत भी इसमें देखने को मिलते है।

२.७.१३ सांध्यकाकली सन १९६९ [मरणोपरान्त प्रकाशित]

१९५४ से उनकी मृत्यूतक की कविताएँ इस अंतिम संग्रह में मिलती हैं।

प्रस्तुत संग्रह में कुल ६८ कविताएँ हैं।

२.८ निष्कर्ष :

अनामिका प्रथम से साध्यकाकती तक की काव्यसाधना निरालाजी के कविताओं का निरंतर विकास होता रहा है। इस विकास में कवि के जीवन का विशेष योगदान रहा है। निराला के विभिन्न काव्य संग्रह हिन्दी की प्रगति की एक सुगठित कहानी का इतिहास प्रस्तुत करते हैं। अपरा में संकलित रचनाएँ इस का प्रमाण है कि कवि की अभिव्यक्ति को युग की सीमाओं में बाँधा नही जा सकता। तेजस्वी व्यक्तित्व तथा प्रबल भावुकता के आदर्यंत दर्शन के सादृश्य इनका काव्य ही है।

-: अध्याय दो :-

- पाद टिप्पनी - [संदर्भ सुची]

पृष्ठ

१. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य ४६८

२. वही. ४६९

३. श्री. धनंजय वर्मा : निराला काव्य एवं व्यक्तित्व १३८

४. डॉ. रमेशचंद्र मेहरा : निराला का परवर्ति काव्य १२०

५. डॉ. गोकाककर / कुलकर्णी : निराला : साहित्यिक मुल्यांकन १६६